Seventeenth Loksabha

>

Title: Regarding encephalitis deaths in Muzaffarpur Bihar and in different parts of the Country

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण): धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपकी उपस्थिति में मुझे सर्वप्रथम इस 17वीं लोक सभा में बोलने का मौका मिला है । आपने मुझे शून्य काल में बोलने की अनुमति दी है, इसके लिए मैं आभार व्यक्त करना चाहूंगा ।

महोदय, यह बहुत ही संवेदनशील विषय है, जिसके सन्दर्भ में मैं आपसे आग्रह करने वाला हूं । बिहार में एक घटना हुई है, जिसमें लगभग 110 बच्चों की मौत हो गई है । यह चिन्ता का विषय है और सरकार पूरी ताकत से लगी है । हम मृतक बच्चों के परिवारों के साथ हैं । दुख भी है कि इतने छोटे, नन्हे बच्चों की मृत्यु हुई, ये सभी दस वर्ष से कम आयु के हैं । साथ ही साथ, मुख्यत: मुजफ्फरपुर में यह घटना हुई है, लेकिन उसके इर्द-गिर्द के इलाकों में भी इसका प्रभाव है । हम सब जानते हैं, हमारी संवेदना उनके साथ है । बिहार की सरकार और भारत सरकार उसके प्रति चिन्तित हैं और उसके प्रति अपना प्रयास कर रहे हैं । लेकिन साथ एक जुड़ा हुआ अन्य विषय भी है, जिसकी ओर मैं सदन का ध्यान आकृष्ट करूंगा और सरकार का भी ध्यान आकृष्ट करूंगा ।

13 25hrs

(Dr. (Prof.) Kirit Premjibhai Solanki *in the Chair*)

सभापति महोदय, हम सभी राजनेता हैं, जन-प्रतिनिधि हैं, गांव-देहात में जाते हैं, शहरों में भी रहते हैं, अस्पतालों में भी जाते हैं, लेकिन हम वैज्ञानिक नहीं हैं । हम कोई रिसर्चर नहीं हैं, हम कोई अनुसंधानकर्ता नहीं हैं और न ही हम कोई डॉक्टर हैं । जब इस प्रकार की कोई घटना होती है तो हम चिन्ता व्यक्त करते हैं । पत्रकार हमसे पूछते हैं, टी.वी. वाले हमसे पूछते हैं, हम अपनी सरकार की तरफ से जो भी प्रयास होता है, उसके बारे में अपनी बात रखते हैं । इसके

साथ-साथ एक अन्य घटना हुई है, क्या वह साजिश है या ऐसी व्यवस्था पूरी दुनिया में चलती आ रही है । हम सब हजारों वर्षों से देख रहे हैं और मैं भी अपने बचपन में लीची खाता था । मुझे लीची बहुत पसन्द थी और सदन में आप सभी लोगों को भी लीची बहुत पसन्द होगी । यह 15 दिनों की फसल है । पूरी दुनिया में लीची की जो फसल है, उसका 40 प्रतिशत भारत में होता है और उसका अधिकांश भाग बिहार में है, फिर देहरादून आदि स्थानों पर भी लीची होती है । अचानक हम सभी लोगों को बताया गया कि ये जो बच्चे मरे, बहुत दर्दनाक घटना थी, यह वायरस है, एंसिफेलाइटिस है, हम इसके बारे में नहीं जानते हैं, यह डाक्टर बताएंगे, रिसर्चर्स बताएंगे, साइंटिस्ट बताएंगे । हजारों वर्षों से वहां लीची की फसल हो रही है । हमने बचपन में लीची खाई तो कभी बीमार नहीं पड़े और अब लीची को आरोपित किया जा रहा है । इसका जियोग्राफिकल इंडिकेशन है, पूरी दुनिया में मुजफ्फरपुर की लीची को माना जाता है और उसका हजारों-करोड़ रुपये का एक्सपोर्ट होता है । भारत के बाद अगर कहीं सबसे ज्यादा मात्रा में होती है तो वह चाइना में होती है । जो हजारों-करोड़ रुपये का लीची एक्सपोर्ट हो रहा था, वह बन्दरगाहों पर रखा हुआ है । उससे जूस बनता था, उसे लोगों ने पीना बन्द कर दिया और पूरे बिहार में 32 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में लीची की फसल है, जो लगभग तीन लाख मीट्रिक टन है । अब यह समझना आवश्यक है कि क्या लीची खाने से ये बच्चे मरे हैं या और भी कोई विषय है । कहीं यह साजिश तो नहीं है । भारत में लीची की 15 दिन की फसल होती है । आम से पहले हम सभी लोग लीची खाते हैं । दक्षिण के लोगों को भी बहुत पसन्द होगा, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में भी लोग लीची खाते हैं । अब चिन्ता का विषय सिर्फ इतना ही है कि आने वाले दिनों में क्या होगा । जो किसान लीची की फसल लगाते थे, व्यापार करते थे, आज 50 फीसदी से ज्यादा लीची लोग बाजार से नहीं ले रहे हैं, घरों में लेकर नहीं आ रहे हैं । यह सच्चाई लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता है कि एंसिफेलाइटिस का कारण क्या है? ये बच्चे क्यों मरे? मात्र लीची को दोष दे देना क्या ठीक है और क्या यह चीन के कारण है? मैं किसी पर आरोप नहीं लगाउंगा, लेकिन कहीं यह साजिश न हो और इससे किसानों का नुकसान न हो ।

सभापति महोदय, मैं आपसे यही आग्रह करूंगा कि इसकी सच्चाई हमें जाननी है । हमारी संवेदना उन बच्चों के साथ है । सरकार लगी हुई है, डॉक्टर हर्ष वर्धन जी लगे हैं, बिहार के माननीय मुख्य मंत्री जी लगे हैं, हम सबकी संवेदनाएं हैं ।...(व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर) : वहां दवाई नहीं है, इसके बारे में भी बोलिए ।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : गौरव गोगोई जी, बैठ जाइए ।

श्री राजीव प्रताप रूडी : यह मेरे बगल का जिला है, लेकिन यह सच्चाई हम तक पहुंचे ताकि उन किसानों का नुकसान न हो । यही मेरा आग्रह है । ...(व्यवधान)

माननीय सभापति: कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, श्री निशिकान्त दुबे, डॉ .संजय जायसवाल, श्री उदय प्रताप सिंह, श्री देवजी एम .पटेल, श्री एस.सी .उदासि और श्रीमती सुप्रिया स दानंद सुले को श्री राजीव प्रताप रूडी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): सर, मैं आपका अत्यंत आभारी हूं कि आपने इस समय एक बड़े ज्वलंत, महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का अवसर दिया । यह निश्चित रूप से हम सभी के लिए दुखदायी है, जिसका उल्लेख रूडी साहब ने भी किया । इस विषय को हम लोग इस सदन में कई बार उठा चुके हैं । यह केवल बिहार के मुजफ्फरपुर ही नहीं, पश्चिम बंगाल, असम, उत्तर प्रदेश आदि जगहों पर भी यह वेक्टर बोर्न डिजीज या वाटर बोर्न डिजीज लगातार पिछले काफी दिनों से चल रही है । यह घटना घटित हुई, आज डॉक्टर हर्ष वर्धन जी स्वास्थ्य मंत्री हैं, इन्होंने इस संबंध में उपाय किया था । इसी सदन में मैंने और योगी आदित्यनाथ जी ने 4 अगस्त, 2014 को एक कॉलिंग अटेंशन दिया था, उस समय आपने तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री के रूप में जवाब दिया था और कहा था कि आपने मुजफ्फरपुर हॉस्पिटल का दौरा किया था । एक मीटिंग 10 जून, 2014 को

की थी, उसमें वायरोलॉजी सेंटर, गोरखपुर बनाने की बात हुई थी । वह सेंटर बन गया है ।

एक आईसीएमआर और एनआईवी कोलैबोरेशन से बिहार को स्टेप-अप करना था और a Memorandum of Understanding between ICMR and Government of Bihar for starting of units of virology in medical colleges must be finalised within three years. An early warning system should be in place. Ahmedabad model may be studied. Strengthening of research work must continue.

माननीय रूडी जी उस इलाके से चुन कर आए हैं और मैं उत्तर प्रदेश से चुन कर आया हूं । अभी तक जापनी एनसेफलाइटिस का वायरस है, यह बात समझ में आई, लेकिन एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिन्ड्रोम, अभी तक इसका दुनिया में कोई इलाज नहीं है । हम इसको तब रोक सकते हैं, जब हम प्रॉपर 100 प्रतिशत इम्यूनाइजेशन का काम करें । यह बीमारी हमारे देश से नहीं आई है । यह जापान से आई, कोरिया से आई, ताइवान में आई, मेन लैंड चाइना में थी । आज उन देशों ने टीकाकरण से अपने यहां इस बीमारी को समाप्त किया । … (व्यवधान)

माननीय सभापति : जगदम्बिका पाल जी, अपनी बात संक्षिप्त में रखिए ।

श्री जगदम्बिका पाल : सभापति महोदय, यह बहुत गंभीर मामला है, मैं इसे बहुत संक्षेप में रख रहा हूं । अगर आज यह उन सारे देशों में खत्म हो चुका है लेकिन वर्ष 1990 से इंडिया, बांग्लादेश, लंका और नेपाल में 'जेइज' और 'एइज' का प्रकोप बढ़ा है । यह कम्बोडिया में खत्म हो गया है । मुज्फ्फरपुर में 152-154 बच्चों की असामयिक मृत्यु हो गई और जो बच्चे बच भी रहे हैं, वे मेंटली रिटार्डेड हो रहे हैं । वहां गरीबी है और उस गरीबी में बच्चों की बीमारी के बाद, अगर वे सर्वाइव करते हैं । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप कंक्लूड कीजिए ।

श्री जगदम्बिका पाल : मैं अपनी बात को कंक्लूड करता हूं । माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी इस सदन में मौजूद है । वह इस मामले में बहुत संवेदनशील हैं । उन्होंने स्वयं तत्कालीन स्वास्थ मंत्री के रूप में कदम उठाए थे, हम लोगों की बैठक बुलाई थी, खुद दौरा किया था । उन्होंने जो एडवाइजरी दी थी, वे बातें पूरी हूईं । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : कुँवर पूष्पेन्द्र सिंह चंदेल जी को श्री जगदम्बिका पाल जी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।